TEHQEEQI PAMPHLET NO. 5

शबे मेराज ग़ौसे पाक

क्या शबे मेराज हुज़ूर गौसे पाक की मुलाक़ात रसूलुल्लाह ﷺ से हुई?



ABDE MUSTAFA

ABOUT US

Abde Mustafa Official, a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at
Our motto : Serving Quraano Sunnat, preaching Ilme Deen and to reform people.

This team came into existence in the year 2012 and in very few years this team did a lot of acts.
There is also a special place of Abde Mustafa Official on social media networking sites.

Lots of people from all over the world are connected to us via Facebook, WhatsApp, Instagram, Telegram, YouTube and Blogger.

Abde Mustafa Official

ABDE MUSTAFA OFFICIAL

abdemustafaofficial.blogspot.com

SHABE MERAJ GHAUSE PAAK

NAZRE SAANI :

Mufti Muhammad Gulrez Misbahi
Mufti Muhammad Muslihuddin Siddiqi
Mufti Muhammad Munawwar Husain Ashrafi
Maulana Hasan Noori
Hafiz Muhammad Sameer Misbahi
Maulana Muhammad Rabeul Qadri
Muhammad Shoaib Ahmad
Hafizahumullahu Ta'ala

ABDE MUSTAFA

ABDE MUSTAFA OFFICIAL
abdemustafaofficial.blogspot.com

शबे मेराज ग़ौसे पाक

चंद किताबों में ये वाक़िया देखने को मिलता है कि शबे मेराज जब नबी -ए- करीम ﷺ अर्श पर तशरीफ़ ले गये तो वहाँ हुज़ूर गौसे पाक की रूह हाज़िरे खिदमत हुई और नबी -ए- करीम ﷺ ने हुज़ूर गौसे पाक के कँधों पर अपना क़दम रखा और इरशाद फ़रमाया: बेटा! मेरे ये क़दम तुम्हारी गर्दन पर हैं और तुम्हारे क़दम तमाम वलियों की गर्दनों पर होंगे।

ये वाक़िया मुख्तलिफ़ तरीक़ों से बयान किया जाता है।

तहरीफुल खातिर नामी किताब में इस तरह भी लिखा हुआ है कि जब नबी -ए- करीम ﷺ अर्श के क़रीब पहुँचे तो उस को बहुत ऊँचा पाया जिस पर बगौर सीढ़ी के चढ़ना मुम्किन ना था कि अल्लाह त'आला ने हुज़ूर गौसे पाक की रूह को भेजा और आप की रूह ने सीढ़ी की जगह अपने कंधे रख दिये, फिर आप ﷺ ने कंधों पर अपने पाऊँ मुबारक रखने का इरादा फ़रमाया तो अल्लाह त'आला से इस के बारे में पूछा, अल्लाह त'आला ने फरमाया कि ये आप की अवलाद में से है और इस का नाम अब्दुल क़ादिर है (और) ए महबूब! अगर आप आखिरी नबी ना होते तो आप के बाद उहदा -ए- नबुव्वत इसे अता किया जाता।

इस पर नबी -ए- करीम ﷺ ने अल्लाह त'अला का शुक्र अदा किया फिर फरमाया कि ए मेरे बेटे! तुझे मुबारक हो कि तूने मुझे देखा और मेरी नेमत से सरफराज़ हुआ फिर उसे भी मुबारक हो जो तुझे देखे और तेरे देखने वाले को देखे फिर जो उसे देखे फिर..... इस तरह आप ﷺ ने 27 बार तक फ़रमाया फिर फ़रमाया कि मैने अपना क़दम तेरी गर्दन पर रखा है और तेरा क़दम तमाम वलियों की गर्दनों पर होगा, अगर मेरे बाद नबुव्वत होती तो तुम नबी होते लेकिन मेरे बाद कोई नबी नहीं।

(دیکھیں: تفریح الخاطر فی مناقب الشیخ عبد القادر، اردو، ص47، قادری رضوی کتب خانہ لاہور)

इस किताब में ये वाक़िया मुख्तलिफ़ अलफाज़ और अन्दाज़ के साथ दर्ज है।

ये वाक़िया जिन्होने कभी नहीं सुना उन के लिये तो फक़त ये वाक़िया ही काफ़ी हैरत-अंगेज है लेकिन बाज़ मुक़र्रिरीन जब इस में नमक मिर्च लगा कर बयान करते हैं तो सुनने वाले हैरान होने के साथ साथ परेशान भी हो जाते हैं।

हम पहले इस वाक़िये के मुतल्लिक़ बाज़ उलमा -ए- अहले सुन्नत के अक़्वाल पेश करते हैं फिर मज़ीद कुछ अर्ज़ करेंगे।

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत रहीमहुल्लाहु त'आला लिखते हैं कि मतालिब चंद क़िस्म हैं, हर क़िस्म का मर्तबा जुदा और हर मर्तबे का पाया -ए- सबूत अलाहिदा (यानी हर तरह की बात को साबित करने के लिये एक जैसे या एक पाये का सुबूत ज़रूरी नहीं है बल्कि जैसी बात होती है उसी तरह की दलील ज़रूरी होती है) इस क़िस्म मतालिब (यानी मज़्कूरा शबे मेराज वाला वाक़िया) अहादीस में ज़ुहूर ना होना मुदर नहीं बल्कि कलिमाते उलमा मशाइख में इन का ज़िक्र काफ़ी।

इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने इस रिवायत की निस्बत के हज़रते उमर फारूक़ रदिअल्लाहु त'अला अन्हु ने हुज़ूर पुरनूर ﷺ के विसाल के बाद कलामे तवील में हुज़ूर अलैहिस्सलाम को हर जुमला पर ब कलिमये "या रसूलल्लाह आप पर मेरे माँ बाप क़ुरबान हों" निदा कर के फज़ाइल -ए- जलीला वा खसाइस -ए- जमीला बयान किये, तहरीर फ़रमाया :

لم اجدہ فی شیئ من کتب الاثر لکن صاحب اقتباس الانوار وابن الحاج فی مدخلہ ذکراہ فی ضمن حدیث طویل وکفی بذلك سندا لمثله فانه لیس مما یتعلق بالاحکام

(نسیم الریاض بحوالہ مناہل الصفا فی تخریج احادیث الشفاء، الفصل السابع، 1/248)

"यानी मैने ये रिवायत किसी किताबे हदीस में ना पायी मगर साहिबे इक़्तिबासुल अनवार और इमाम इब्नुल हाज ने अपनी मुद्खल में इसे एक हदीसे तवील के ज़िमन में ज़िक्र किया और ऐसी रिवायत को इस क़दर सनद किफायत करती है कि इन्हें कुछ बाब -ए- अहकाम से ताल्लुक़ नहीं।"

बिलजुमला रूहे मुक़द्दस का शबे मेराज को हाजिर होना और हुज़ूरे अक़दस ﷺ का हज़रते गौसियत की गर्दन मुबारक पर क़दमे अकरम रख क बुराक़ या अर्श पर जलवा फरमाना और सरकार -ए- अबद क़रार से फरज़न्दे अर्जुमंद को इस खिदमत के सिला में ये इनामे अज़ीम अता होना (कि तुम्हारा क़दम वलियों की गर्दनों पर होगा) इन में कोई अम्र ना अक़्लन और शरअन मह्जूर और कलिमात -ए- मशाइख में मस्तूरो मासूर, कुतुबे हदीस में ज़िक्र मादूम ना कि अदम मज़कूर, ना रिवायत -ए- मशाइख इस तरह सनद -

ए- ज़ाहिरी में महसूर और क़ुदरते क़ादिर वसी वा मौफ़ूर और क़द्रे क़ादरी की बुलंदी मशहूर फिर रद्दो इन्कार क्या मुक़्तदाये अदबो शऊर।

(فتاوی رضویہ،ج28،ص411و412)

इस वाक़िये में ये जुमला कि "मेरे बाद अगर नबुव्वत होती तो तुम नबी होते" पर आला हज़रत लिखत हैं कि अगर्चे (ये) अपने मफहूम -ए- शर्ती पर सहीह व जाइज़ुल इत्लाक़ है कि बेशक मर्तबा -ए- आलिया रफिया हुज़ूर पुरनूर रदिअल्लाहु त'आला अन्हु उलू मर्तबा -ए- नबुव्वत है (यानी मर्तबा -ए- गौसियत, मर्तबा -ए- नबुव्वत के पीछे है), खुद हुज़ूर -ए- मुअल्ला रदिअल्लाहु त'अला अन्हु फरमाते हैं : जो क़दम मेरे जद्दे अकरम ﷺ ने उठाया मैने वहीं क़दम रखा सिवा अक़दाम -ए- नबुव्वत के, कि उन में गैरे नबी का हिस्सा नहीं।

از نبی برداشتن گام از تو بنہادن قدم

غیر اقدام النبوۃ سد مشاھا الختا

(नबी का काम क़दम उठाना और आप का काम क़दम रखना है इलावा अक़्दाम -ए- नबुव्वत के, कि वहाँ खत्मे नबुव्वत ने रास्ता बन्द कर दिया है।)

और जवाज़ -ए- इत्लाक़ (इस जुमले का) यूँ कि खुद हदीस में अमीरुल मुअमिनीन, उमर फारुक़ रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के लिये वारिद :

لوکان بعدی نبی لکان عمر بن الخطاب رواہ احمد و الترمذی والحاکم عن عِقبة بن عامر والطبرانی فی الکبیر عن عصمة بن مالک رضی اللہ تعالی عنهما

"मेरे बाद नबी होता तो उमर होता"

(इस को इमाम अहमद, तिर्मिज़ी और हाकिम ने उक़्बा बिन आमिर से जबकि तबरानी ने मुअजमे कबीर अस्मा बिन मालिक रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा से रिवायत किया)

(جامع الترمذی ابواب المناقب مناقب عمر بن خطاب رضی اللہ عنه، 2/209، المستدرك للحاكم كتاب معرفة الصحابة، لوكان بعدی نبی لكان عمر ، دار الفكر بيروت، 3/85، المعجم الكبير ،

حدیث475، المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت، 17/180، مسند امام احمد بن حنبل، حدیث عقبہ بن عامر، المکتب الاسلامی بیروت، 4/154)

दूसरी हदीस में हज़रते इब्राहीम साहिबज़ादा -ए- हुज़ूरे अक़दस ﷺ के लिये वारिद :

لو عاش ابراھیم لکان صدیقا نبیا۔ رواہ ابن عساکر عن جابر بن عبداللہ و عن ابن عباس و عن ابن ابی اوفی والباوردی عن انس بن مالك رضی اللہ تعالی عنھم

"अगर इब्राहीम जीते तो सिद्दीक़ व पैगम्बर होते"
(इस को इब्ने असाकिर ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह और इब्ने अब्बास और इब्ने अबी औफा से जबकि अल बवर्दी ने हज़रते अनस बिन मालिक से रिवायत किया, अल्लाह त'आला उन से राज़ी हो)

(تاریخ دمشق الکبیر باب ذکر بنیہ وبناتہ علیہ الصلوۃ والسلام وازواجہ، داراحیاء التراث العربی بیروت، 3/75، کنزالعمال بحوالہ الباوردی عن انس وابن عساکر عن جابر بن عبداللہ، ابن عباس وابن ابی اوفٰی، 11/469، حدیث32204)

उलमा ने इमाम अबू मुहम्मद जुवेनी रहीमहुल्लाह त'आला की निस्बत कहा है कि :
अगर अब कोई नबी हो सकता तो वो होते।
इमाम इब्ने हजर मक्की अपने फ़तावा हदीसिया में फ़रमाते हैं :

قال فی "شرح المھذب" نقلا عن الشیخ الامام المجمع علی جلالتہ وصلاحہ وامامتہ ابی محمد الجوینی الذی قیل فی ترجمتہ لو جاز ان یبعث اللہ فی ھذہ الامۃ نبیا لکان ابا محمد الجوینی

"शरह महज़्ज़ब में कहा नक़्ल करते हुये उस शैख व इमाम से जिन की जलालत व सलाहियत व इमामत पर इज्मा है यानी अबू मुहम्मद जुवेनी अलैहिर्रहमा जिन के तारुफ में कहा गया है कि अगर अब अल्लाह त'आला की तरफ़ से इस उम्मत में किसी नबी को भेजना जाइज़ होता तो वो अबू मुहम्मद जुवेनी होते"

(الفتاوی الحدیثیہ، مطلب قیل لو جاز ان یبعث اللہ فی ھٰذہ الامۃ نبیا الخ، داراحیاء التراث العربی بیروت، ص324، 325)

मगर हर हदीस हक़ है, हर हक़ हदीस नहीं।

واللہ تعالی اعلم

हदीस मानने और हुज़ूरे अकरम, सय्यिदे आलम ﷺ की तरफ निस्बत के लिये सुबूत चाहिये, बे सुबूत निस्बत जाइज़ नहीं और क़ौले मज़कूर साबित नहीं, वल्लाहु त'आला आलम।

(ایضاً، ص415،416)

एक और सवाल के जवाब में लिखते हैं कि रहा शबे मेराज में रूहे पूर फुतूह हज़रते गौसुस सक़लैन रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का हाज़िर हो कर पाये अक़दस हुज़ूर पुरनूर सय्यिद -ए- आलम ﷺ के नीचे गर्दन रखना और वक़्ते रुकूब -ए- बुराक़ या सु'ऊदे अर्श ज़ीना बनना, शरअन वा अक़्लन इस में कोई भी इस्तिहाला नहीं।

सिद्रतुल मुन्तहा अगर मुन्तहाये उरूज है तो बा ऐत्बारे अज्साम ना बा नज़रे अरवाह उरूजे रूहानी हजारों अकाबिर औलिया को अर्श बल्कि मफौक़ुल अर्श तक साबित व वाक़े जिस का इन्कार ना करेगा मगर उलूम -ए- औलिया का मुन्कर बल्कि बा वुज़ू सोने वाले के लिये हदीस में वारिद कि : "उस की रूह अर्श तक बुलंद की जाती है" ना इस क़िस्सा में माज़ अल्लाह बूये तफ्ज़ील या हमसरी हुज़ूर सय्यिदुना गौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के लिये निकलती है, ना इस की इबारत हा इशारत से कोई ज़हने सलीम इस तरफ़ जा सकता है।

क्या अजब सवारी बुराक़ से भी यही माना तराशे जायें कि ऊपर जाने का काम हज़रते जिब्रईल अलैहिस्सलाम और रसूल -ए- करीम ﷺ से अंजाम को ना पहुँचा बुराक़ ने ये मुहिम सर अंजाम को पहुँचाई (यानी जो कि ये कहे कि क्या हुज़ूर गौसे पाक के कन्धों के बगैर हुज़ूरे अकरम ﷺ बुराक़ या अर्श पर जलवा फरमा होने से क़ासिर थे या मुह्ताजी के माना तराशे तो फिर ये भी देखना चाहिये कि ज़मीन से आस्मानो का सफ़र बुराक़ पर हुआ तो क्या हज़रते जिब्रईल और आक़ा -ए- करीम ﷺ इस से क़ासिर थे कि अज़ खुद तशरीफ ले जा सकें)

दरपर्दा इस में बुराक़ को फज़ीलत देना लाज़िम आता है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ बा नफ्से नफ़ीस तो ना पहुँच सके और बुराक़ पहुँच गया, इस के ज़रिये से हुज़ूर की रसाई हुई या

हाज़ा (ये) खिदमत के अफ'आल जो बा नज़्रे ताज़ीम व इज्लाल -ए- सलातीन बजा लाते हैं क्या इन के ये माना होते हैं कि बादशाह इन उमूर में आजिज़ और हमारा मुमताज है?.....
इलावा बरी किसी बुलंदी पर जाने के लिये ज़ीना बनने से ये क्यों कर मफहूम के ज़ीना बनने वाला खुद बे ज़ीना वसूल पर क़ादिर... सीढ़ी ही को देखें कि ज़ीना -ए- सु'ऊद है और खुद अस्लन सु'ऊद पर क़ादिर नहीं।
फर्ज़ कीजिये कि हंगामे बुत शिकनी हज़रते अमीरुल मुअमिनीन मौला अली करमल्लाहु वजहहू की अर्ज़ क़ुबूल फरमायी जाती और हुज़ूर पुरनूर अफ्ज़लुस सलावतुल्लाही वा अक्मलुत तस्लीमातिही अलैही व अला आलिही उन के दोशे मुबारक पर क़दम रख कर बुत गिराते तो क्या इस का ये मफाद होता कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ तो माज़ अल्लाह इस काम में आजिज़ और हज़रते अली करमल्लाहु त'आला वजहहू क़ादिर थे, गर्ज़ ऐसी माने मुहाल, ना हरगिज़ इबारते क़िस्सा से मुस्तफाद, ना इन के क़ाइलीन बेचारो को मुराद;

واللہ الہادی الی سبیل الرشاد

(और अल्लाह त'आला ही दुरुस्त रास्ते की तरफ हिदायत अता फरमाने वाला है)
ये बयान इब्ताल -ए- इस्तिहाला व इस्बात -ए- सिह्हत बा माना इमकान के मुतल्लिक़ था। खुलासा मक़सद इस का मा ज़ियादत -ए- जदीदा ये कि इस की असल कलिमात बाज़ मशाइख में मस्तूर, इस में अक़्ली व शरई कोई इस्तिहाला नहीं, बल्कि अहादीस व अक़वाल -ए- औलिया व उलमा में मुतअद्दिद बन्दगाने खुदा के लिये ऐसा हुज़ूर -ए- रूहानी वारिद (यानी अहादीस वा अक़्वाल में कई लोगों का रूहानी तौर पर हाज़िर होना मज़कूर है, जिन में बाज़ का ज़िक्र दर्जे ज़ेल है)
मुस्लिम अपनी सहीह और अबू दाऊद तेयलिसी मुस्नद में जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी और अब्द बिन हम्माद बा सनदे हसन अनस बिन मालिक रदिअल्लाहु त'आला अन्हुम से रावी, हुज़ूर सय्यिद -ए- आलम ﷺ फरमाते हैं :

ودخلت الجنة فسمعت خشفة فقلت ماهذه قالوا هذا بلال ثم دخلت الجنة فسمعت خشفة فقلت ماهذه قالوا هذه الغميصاء بنت ملحان

"मैं जब जन्नत में दाखिल हुआ तो एक पहचल सुनी, मैने पूछा : ये क्या है?
मलाइका ने अर्ज़ की : ये बिलाल हैं।
फिर तशरीफ़ ले गया, पहचल सुनी, मैने पूछा : ये क्या है?
अर्ज़ किया : गमीसा बिन्ते मल्हान, यानी उम्मे सुलैम मादर -ए- अनस रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा।"

(کنزالعمال بحوالہ عبد بن حمید عن انس والطیالسی عن جابر، حدیث 33161، موسسۃ الرسالہ بیروت، 11/653، مسندابی داودالطیالسی، عن جابر حدیث، 1719، دارالمعرفۃ بیروت، الجزء السابع، ص238، صحیح مسلم، کتاب الفضائل باب من فضائل ام سلیم الخ، قدیمی کتب خانہ کراچی، 2/292)

इमाम अहमद व अबू याला बा सनदे सहीह हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास औए तबरानी कबीर और इब्ने अदी कामिल बा सनदे हसन अबू इमामा बाहिली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से रावी, हुज़ूरे अक़दस ﷺ फरमाते हैं :

دخلت الجنة فسمعت فی جانبها وجسافقلت یا جبرئیل ماهذا قال هذا بلال المؤذن

"मैं शबे मेराज जन्नत में तशरीफ ले गया उस के गोशे में एक आवाज़ -ए- नर्म सुनी, पूछा : ए जिब्रईल! ये क्या है?
अर्ज़ की : ये बिलाल मुअज़्ज़िन हैं। रदिअल्लाहु त'आला अन्हु"

(کنزالعمال، حدیث33162، 33163، مؤسسۃ الرسالہ بیروت، 11/653، الکامل لابن عدی ترجمہ یحییٰ بن ابی حبۃ ابن جناب الکلبی، دارالفکر بیروت، 7/2670)

इमाम अहमद व मुस्लिम व निसाई अनस रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से रावी, हुज़ूर ﷺ फरमाते हैं :

دخلت الجنة فسمعت خشفة بین یدی، فقلت ماهذه الخشفة، فقیل الغمیصاء بنت ملحان

"मैं बिहिश्त (जन्नत) में रौनक़ अफरोज़ हुआ, अपने आगे एक खटका सुना, पूछा : ए जिब्रईल! ये क्या है?

अर्ज़ की गयी : "غميصا بنت ملحان"

(صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب من ام سلیم الخ، قدیمی کتب خانہ کراچی، 2/292، مسند احمد بن حنبل عن انس رضی اللہ تعالی عنہ، المکتب الاسلامی بیروت، 3/99)

इमाम अहमद व निसाई व हाकिम बा अस्नादे सहीहा उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा रदिअल्लाहू त'आला अन्हा से रावी, हुज़ूर सय्यदुल मुर्सलीन ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :

دخلت الجنة فسمعت فيها قراءة، فقلت من هذا؟ قالوا حارثة بن نعمان كذٰلكم البر كذٰلكم البر

"मैं बिहिश्त में जलवा फरमा हुआ, वहाँ क़ुरआन -ए- करीम पढ़ने की आवाज़ आयी, पूछा : ये कौन है?

अर्ज़ की गयी : हारिसा बिन नोमान, नेकी ऐसी होती है, नेकी ऐसी होती है।"

(مسند احمد بن حنبل عن عائشه رضی اللہ عنہا، المکتب الاسلامی بیروت، 6/36، المستدرک للحاکم، کتاب معرفة الصحابة، مناقب حارثه بن نعمان، دارالفکر بیروت، 3/208، الاصابة فی تمییز الصحابة بحوالہ النسائی، حارثه بن نعمان، دارصادر بیروت، 1/298)

इब्ने साद तबकात में अबू बकर उदवी से मुर्सलन रावी, हुज़ूर सय्यदुल मुर्सलीन ﷺ फरमाते हैं :

دخلت الجنة فسمعت نحمة من نعيم

"मैं जन्नत में तशरीफ फरमा हुआ तो नुएम की खंकार सुनी।"

(الطبقات الکبری لابن سعد الطبقة الثانية من المهاجرين والانصار، ترجمہ نعیم بن عبداللہ المعروف النحام، دارصادر بیروت، 4/138)

ये नुएम बिन अब्दुल्लाह उदवी मारुफ़ बा नहाम (कि इसी हदीस की वजह से इन का ये उर्फ़ क़रार पाया) खिलाफते अमीरुल मुअमिनीन फारुक़ -ए- आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु में जंगे अजनदैन में शहीद हुये।

كما ذكره موسى بن عقبة فى المغازى عن الزهرى وكذا قاله ابن اسحٰق ومصعب الزبيرى وآخرون كما فى الاصابة

जैसा कि मूसा बिन उक़्बा ने मगाज़ी में ज़हरी के हवाले से इस को ज़िक्र किया यूँ ही कहा इब्ने इशहाक़ और मुसब ज़ुबैरी और दीगर उलमा ने जैसा कि असाबा में है।

(الاصابة فى تمييز الصحابة، ترجمه نعيم بن عبدالله، دار صادر بيروت، 3/568)

सुब्हान अल्लाह! जब अहादीस -ए- सहीहा से इहया -ए- आलम शहादत का हुज़ूर साबित तो आलम -ए- अरवाह से बाज़ अरवाह -ए- क़ुद्सिया का हुज़ूर क्या दूर? इमाम अबू बकर बिन अबिद्दुनिया, अबुल मखरिक़ से मुरसलन रावी, हुज़ूर पुरनूर ﷺ फरमाते हैं :

مررت ليلة اسرٰى بى برجل مغيب نورالعرش، قلت : من هذا، املک؟ قيل: لا۔ قلت: نبى؟ قيل: لا۔ قلت : من هذا؟ قال: هذا رجل كان فى الدنيا لسانه رطب من ذكر الله تعالى وقلبه معلق بالمساجد ولم يستسب لوالديه قط

"यानी शबे असरा मेरा गुज़र एक मर्द पर हुआ कि अर्श के नूर में गाइब था, मैने फ़रमाया: ये कौन है? कोई फिरिश्ता है?

अर्ज़ की गयी : नहीं।

मैने फ़रमाया : नबी है?

अर्ज़ की गयी : नहीं।

मैने फ़रमाया : कौन है?

अर्ज़ की गयी : ये एक मर्द है, दुनिया में इस की ज़ुबान यादे इलाही से तर थी और दिल मस्जिदों से लगा हुआ और (इस ने किसी के माँ बाप को बुरा कह कर) कभी अपने माँ बाप को बुरा ना कहलवाया।

(الدر المنثور بحواله ابن ابى الدنيا تحت الآية 2/152، مكتبه آية الله العظمى قم ايران، 1/149، الترغيب والترهيب بحواله ابن ابى الدنيا كتاب الذكر والدعاء، الترغيب فى الاكثار من ذكر الله الخ مصطفى، البابى مصر، 2/395)

ثم اقول وباللہ التوفیق

(फिर मैं कहता हूँ और तौफीक़ अल्लाह ही की तरफ से है) क्यों राहे दूर से मक़्सदे क़ुरब निशान दीजिये, फैज़े क़ादरियत जोश पर है, बहरे हदीस से खास गोहर मुराद हासिल कीजिये।
हदीसे मर्फू मरवी कुतुबे मशहूरा अइम्मा -ए- मुहद्दिसीन से साबित कि हुज़ूर सय्यिदुना गौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु मा (साथ में) अपने तमाम मुरीदीन व असहाब व गुलामान बारगाहे आसमान क़ब्बाब के शबे असरा अपने मेहरबान बाप ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुये और हुज़ूरे अक़दस के हमराह बैतुल मामूर में गये, हुज़ूर पुरनूर के पीछे नमाज़ पढ़ी, हुज़ूर के साथ बाहर तशरीफ लाये।

والحمدللہ رب العالمین

अब नाज़िर गैर वसीउन नज़र मुत'अज्जिबाना पूछेगा कि ये क्यों कर?....
हाँ हम से सुनें :
इब्ने जरीर व इब्ने अबी हातिम व अबी याला व इब्ने मुर्दविया व बैहक़ी व इब्ने असाकर हज़रते अबू सईद खुदरी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से हदीस तवील मेराज में रावी, हुज़ूरे अक़दस ﷺ फरमाते हैं :

ثم صعدت الی السماء السابعة فاذاانا بابراھیم الخلیل مسندا ظھرہ الی البیت المعمور (فذکر الحدیث الی ان قال) واذابامتی شطرین شطر علیھم ثیاب بیض کانھاالقراطیس وشطر علیھم ثیاب رمد فدخلت البیت المعمور ودخل معی الذین علیھم الثیاب البیض وحجب الاخرون الذین علیھم ثیاب رمد وھم علی خیر فصلیت انا ومن معی من المومنین فی البیت المعمور ثم خرجت انا ومن معی (الحدیث)

"फिर मैं सातवें आसमान पर तशरीफ ले गया, नागाह वहाँ हज़रते इब्राहीम खलीलुल्लाह मिले कि बैतुल मामूर से पीठ लगाये तशरीफ फरमा हैं और नागाह अपनी उम्मत दो

क़िस्म पायी, एक क़िस्म के सफेद कपड़े हैं कागज़ की तरह और दूसरी क़िस्म का खकिस्तर लिबास।

मैं बैतुल मामूर के अन्दर तशरीफ़ ले गया और मेरे साथ सफेद पोश भी गये, मैले कपड़े वाले रोके गये मगर हैं वो भी खैरो खूबी पर फिर मैने और मेरे साथ के मुसलमानों मे बैतुल मामूर में नमाज़ पढ़ी फिर मैं और मेरे साथ वाले बाहर आये।

(تاریخ دمشق الکبیر، باب ذکر عروجه الی السماء الخ، داراحیاء التراث العربی بیروت، 3/294، دلائل النبوة للبیهقی، باب الدلیل علی ان النبی صلی الله علیه وسلم عرج به الی السماء، دارالکتب العلمیة بیروت، 2/94، الدرالمنثور بحواله ابن جریر وابن حاتم وغیره الخ، تحت الآیة، داراحیاء التراث العربی بیروت، 5/172)

ज़ाहिर है कि जब सारी उम्मते मरहूमा बिफज़्लिही अज़्ज़वजल शरीफ़ बरयाब से मुशर्रफ़ हुई यहाँ तक कि मैले लिबास वाले भी तो हुज़ूर गौसुल वरा और हुज़ूर के मुन्तसिबाने बा सफ़ा तो बिला शुब्हा उन उजली पौशाक वालों में हैं, जिन्होने हुज़ूर रहमते आलम ﷺ के साथ बैतुल मामूर में जा कर नमाज़ पढ़ी।

अब कहाँ गये वो जाहिलाना इस्तिबाद के आज कल के कम इल्म मुफ्तियों के सद्दे राह हुये, और जब यहाँ तक बिहम्दिल्लाह साबित तो मामला -ए- क़दम में क्या वजहे इंकार है कि क़ौले मशाइख को ख्वाही नाख्वाही रद्द किया जाये।

हाँ सनद मुहद्दिसाना नहीं.... फिर ना हो..... इस जगह इस क़दर बस है, सनदे मुअनअन (अन फुलाँ अन फुलाँ वाली सनद) की हाजत नहीं।

"کما بیناہ فی رسالتنا "ھدی الحیران فی نفی الفئی عن سید الاکوان

(जैसा कि हम ने अपने रिसाले में इसे बयान किया है।)

(ایضاً، ص420تا426)

एक और सवाल के जवाब में लिखते हैं :

कुतुबे अहादीस व सियर में इस रिवायत का निशान नहीं, रिसाला गुलाम इमाम शहीद महज़ ना मुअतबर, बल्कि शरीह अबतील व मौज़ूआत पर मुश्तमिल है। मंज़िले अस्ना अशरिया कोई किताब फक़ीर की नज़र से ना गुज़ारी ना कहीं इस का तज़्किरा देखा।

तोहफा -ए- क़ादरिया शरीफ़ (1) आला दर्जे की मुस्तनद किताब है, इस के मुताले भी इस्तियाब से बारहा मुशर्रफ हुआ, जो नुस्खा मेरे पास है या और जो मेरी नज़र से गुज़रा उन में ये रिवायत अस्लन नहीं।

(1) तोहफा -ए- क़ादरिया, हज़रत शाह अबुल मुआली क़ादरी (1141H) की फारसी तलीफ है। जिस में हुज़ूर गौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के हालात और करामात का तज़्किरा है।
आप अपने वक़्त के मशाइख में शुमार होते हैं।
हज़रते शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस द्हेलवी रहीमहुल्लाह ने आप के इरशाद पर अश'अतुल लम'आत और शरह फुतूहुल गैब मुकम्मल फरमायी।
आप का मज़ार लाहौर में वाक़े है।
तोहफा -ए- क़ादरिया के क़लमी नुस्खे अकसर कुतुब खानों में मौजूद हैं, असल फारसी नुस्खा ता हाल तबा ना हुआ, अलबत्ता इस का उर्दू तर्जुमा सीरतुल गौस मुअल्लिफा मुहम्मद बाक़िर नक़्शबन्दी (1323H) और तोहफा -ए- क़ादरिया (उर्दू) मुअल्लिफ़ा मौलाना अब्दुल हकीम (1324H) मलक फज़लुद्दीन ताजिर कुतुब लाहौर के नामों से शाया हो चुके हैं।
(आला हज़रत मज़ीद लिखते हैं कि) बा'यी हमा से ज़माने के मुफ्तियान -ए- जुहूल, मुख्तियान -ए- गुफूल (गाफिल और खताकार मुफ्ती) ने जो इस का बतलान यूँ साबित करना चाहा कि सिद्रतुल मुन्तहा से बाला उरूज किया और इस में माज़ अल्लाह हुज़ूरे अक़्दस वा अनवर ﷺ पर हुज़ूर पुरनूर गौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की तफज़ील निकलती है। (2) ये महज़ तास्सुब व जहालत है जिस का रद्द फक़ीर ने एक मुफस्सल फतवे में किया है।

(2) देवबन्दियों के हकीमुल उम्मत मौलवी अशरफ अली थानवी, मदरसा देवबंद के असातीन मौलवी खलील अहमद और मौलवी रशीद अहमद अम्बेठवी का फ़तवा कि तरदीद हो रही है जिस में इस रिवायत को ले कर गलत फतावा दिया गया था।

(आला हज़रत मज़ीद लिखते हैं कि) फाज़िल अब्दुल क़ादिर इब्ने शैख मुहीयुद्दीन अर्बली ने किताब "तफरीहुल खातिर" में ये रिवायत लिखी है और इसे जामे शरीअत व हक़ीक़त शैख रशीद बिन मुहम्मद जुनैदी रहीमहुल्लाह की किताब हरज़ुल आशिक़ीन से नक़्ल किया है और ऐसे उमूर में इतनी ही सनद बस है।
इस का बयान फक़ीर के दूसरे फतवे में है (जिसे हम नक़्ल कर चुके)

(ایضاً، ص428تا430)

अल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी रहीमहुल्लाह त'आला इस वाक़िये के मुतल्लिक़ लिखते हैं :

मुजद्दिद -ए- आज़म, आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा रहीमहुल्लाह त'आला फरमाते हैं कि कुतुबे अहादीस व सियर में इस रिवायत का निशान नहीं, रिसाला गुलाम इमाम शहीद महज़ ना मुअतबर, बल्कि शरीह अबतील व मौज़ूआत पर मुश्तमिल है। मंज़िले अस्ना अशरिया कोई किताब फक़ीर की नज़र से ना गुज़ारी ना कहीं इस का तज़्किरा देखा।
तोहफा -ए- क़ादरिया शरीफ़ आला दर्जे की मुस्तनद किताब है, इस के मुताले भी इस्तियाब से बारहा मुशर्रफ हुआ, जो नुस्खा मेरे पास है या और जो मेरी नज़र से गुज़रा उन में ये रिवायत अस्लन नहीं।
फाज़िल अब्दुल क़ादिर क़ादरी इब्ने शैख मुहीयुद्दीन अर्बली ने किताब "तहरीफुल खातिर" में ये रिवायत लिखी है और इसे जामे शरीअत व हक़ीक़त शैख रशीद बिन मुहम्मद जुनैदी रहीमहुल्लाह की किताब हरज़ुल आशिक़ीन से नक़्ल किया है और ऐसे उमूर में इतनी ही सनद बस है। इस का बयान फक़ीर के दूसरे फतवे में है (जिसे हम नक़्ल कर चुके)।
लेकिन इस किताब में ये वाक़िया बुराक़ पर सवार होते वक़्त का लिखा है वैसे बाज़ किताबों में अर्श जाने के बारे में भी लिखा है।

इस रिवायत में अक़्लन या शरअन कोई इस्तिबाद नहीं अलबत्ता इस जाहिल (सवाल में साइल ने जिस का ज़िक्र किया, उस) ने जिन कलिमात के साथ इस को बयान किया है, ये उस की जहालत है, इस से उसे तौबा करना फर्ज़ है, क्योंकि उस ने हुज़ूर -ए- अक़्दस ﷺ पर झूट बांधा है, जिन किताबों में ये रिवायत है उन में ये कलिमात नहीं, रिवायत में सिर्फ इतना है कि हुज़ूर गौसे पाक रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की रूहे पाक हाज़िर हुई और अपना कांधा पेश किया, हुज़ूर -ए- अक़्दस ﷺ ने काँधे पर क़दम रखा और बुराक़ से अर्श पर तशरीफ ले गये, इस पर हुज़ूर ﷺ ने खुश हो कर फ़रमाया कि मेरा क़दम तेरी गर्दन पर और तुम्हारा क़दम सारे औलिया की गर्दन पर।
वल्लाहु त'आला आलम

(فتاوی شارح بخاری، ج1، ص312)

अल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी रहीमहुल्लाह त'आला से एक और सवाल किया गया कि शबे मेराज सय्यिदुना गौसे पाक ने पाये अक़्दस हुज़ूर ﷺ को अपने कान्धे का सहारा दिया जब कि वो मौजूद नहीं थे? साइल जो लगा कि उस वक़्त तो आप पैदा ही नहीं हुये थे तो ये कैसे मुमकिन है?
आप रहीमहुल्लाह जवाब में लिखते हैं कि यहाँ (इस वाक़िये में) मुराद रूहे मुबारक है।

(ایضاً، ص312)

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत रहीमहुल्लाह त'आला से इन अशआर के बारे में सवाल किया गया कि क्या ये दुरुस्त हैं :

रूबरू -ए- अहमद हम को
खुश वसीला आज तुम हो
खादिमों में हम को समझो
अल मदद या अब्दल क़ादिर

तुम शबे मेराज आ कर
दोष बर पाये पयम्बर
ले चढ़े अर्शे बरी पर
अल मदद या अब्दल क़ादिर

इमामे अहले सुन्नत जवाब में लिखते हैं कि पहले दो शेर बहुत अच्छे हैं और पिछले शेरों में गलती है।
तहरीफुल खातिर वग़ैरा में ये मज़कूर है कि हुज़ूर -ए- अक़दस ﷺ शबे मेराज हुज़ूर गौसे पाक रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के दोशे मुबारक पर पाये अनवर रख कर बुराक़ पर तशरीफ फरमा हुये और बाज़ के कलाम में है कि अर्श पर हुज़ूर -ए- अक़दस ﷺ के तशरीफ ले जाते वक़्त ऐसा हुआ ना ये कि हुज़ूर गौसियत पाये अक़दस काँधे पर लेकर शबे मेराज अर्श पर गये।
शायर अगर यूँ कहता मुताबिक़ -ए- रिवायत मज़्कूर होता :

था तुम्हारा दोशे अत्हर
ज़ीना -ए- पाये पयम्बर
जब गये अर्शे बरी पर
अल मदद या अब्दुल क़ादिर

ये दोनों सूरतों को शामिल है जब गये यानी जिस वक़्त या जिस शब के इस में पहली सूरत भी दाखिल और अगर तर्जी का मिसरा यूँ होता तो और बेहतर था "अल मदद या गौसे आज़म" के खाली नामे पाक के साथ निदा भी ना होती और तक़्ती से लाम भी ना गिरता।
वल्लाहु त'आला आलम

(فتاوی افریقہ، ص56، 57، ملخصًا)

अल्लामा मुफ्ती फ़ैज़ अहमद उवैसी रहीमहुल्लाह त'आला इस वाक़िये के मुतल्लिक़ लिखते हैं :

जो हदीस हुज़ूर गौसे पाक रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के मुतल्लिक़ बयान की जती है वो कश्फ़ है, इस्तिलाहन इसे हदीस नहीं कहा जाता अगरचे इस कश्फ़ की ताईद इशारतन हदीसे मेराज से होती है लेकिन वो भी खबरे वाहिद है।

अपने कश्फियात व खबरे वाहिद से अक़ाइद साबित नहीं होते हाँ अलबत्ता फज़ाइल साबित होते हैं और हुज़ूर गौसे पाक की फज़ीलत का कोई मुन्कर नहीं।

हुज़ूर गौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का क़दम मुबारक औलिया -ए- हाज़िरीन मुतक़द्दिमीन वा मुतअखिरीन सब पर है।

हाज़िरीन पर ज़ाहिर और मुतक़द्दिमीन वा मुतअखिरीन पर बातिनन और रूहानी तौर पर लेकिन मुतक़द्दिमीन में से मुराद सहाबा व अहले बैत को मुस्तसना करेंगे, ऐसे ही मुतअखिरीन में इमाम मेहदी को मुस्तस्ना किया जायेगा यूँ ही ताबईन में से बाज़ हज़रात, तफसीलन फक़ीर की तस्नीफ़ "क़दमुल गौसिल जली अला रक़बती कुल्लिल वली" में है।

हुज़ूर मुजद्दिद अल्फे सानी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु भी इस क़दमी के हुक्म में दाखिल हैं।

आप के मकतूब जिल्द अव्वल की इबारत से जिस्मानी क़दम की नफी मुराद है और क़दम से बुज़ुर्गी और गलबा -ए- सिलसिला भी मुराद लिया गया है और हुज़ूर गौसे आज़म रदिअल्लाहु त'अला अन्हु की फज़ीलत कि हुज़ूर मुजद्दिदे अल्फे सानी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु भी मुन्किर नहीं जैसा कि मकतूबात गौसे आज़म...

(ملتقطاً: فتاوی اویسیہ، ص399، 400)

अल्लामा मुफ्ती अब्दुल मन्नान आज़मी रहीमहुल्लाह इस वाक़िये के मुतल्लिक़ लिखते हैं :

तफरीहुल खातिर वग़ैरा में इस क़िस्म की रिवायतों का ज़िक्र है और अक़्ले शरई में इस का इस्तिबाद भी नहीं कि हुज़ूर गौसे पाक की रूहे मुबारक उस वक़्त आप ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुये और कोई खिदमत बजा लायी हो।

इस रिवायत की सनद हमारे सामने नहीं कि इस की की तनक़ीद करें।

वल्लाहु त'आला आलम।

(فتاوی بحر العلوم، ج6، ص178)

अल्लामा मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी रहीमहुल्लाह इस रिवायत के मुतल्लिक़ लिखते हैं :

फ़तावा अफ्रीका में है कि तफरीहुल खातिर वग़ैरा में है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ शबे मेराज हुज़ूरे गौसे पाक रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के दोशे मुबारक पर पाये अनवर रख कर बुराक़ पर तशरीफ़ फ़रमा हुये और बाज़ के कलाम में है कि अर्श पर हुज़ूर ﷺ के तशरीफ़ ले जाते वक़्त ऐसा हुआ।

वल्लाहू त'आला आलम

(فتاوی فیض الرسول، ج1، ص153)

अल्लामा मुफ्ती नूरुल्लाह क़ादरी रहीमहुल्लाहु त'आला ने भी फतावा अफ्रीका से हवाले से लिखा है कि तफरीहुल खातिर वग़ैरा में है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ शबे मेराज हुज़ूरे गौसे पाक रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के दोशे मुबारक पर पाये अनवर रख कर बुराक़ पर तशरीफ़ फ़रमा हुये और बाज़ के कलाम में है कि अर्श पर हुज़ूर ﷺ के तशरीफ़ ले जाते वक़्त ऐसा हुआ।

(فتاوی نوریہ، ج5، ص169)

इरफान -ए- शरीअत में भी इस वाक़िये के हवाले से तहरीर है जिसे हम ऊपर फतावा रज़विया के हवाले से नक़ल कर चुके हैं।

(عرفان شریعت، ص55)

अल्लामा मुफ्ती अजमल क़ादरी रहीमहुल्लाहु त'आला इस रिवायत के बारे में लिखते हैं:

शबे मेराज हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ के बुराक़ पर सवार होते वक़्त या अर्श पर तशरीफ ले जाते वक़्त हुज़ूर गौसे पाक रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की रूहे मुबारक का सरकार के पाये अक़दस के नीचे अपने दोशे मुबारक को ज़ीना बनाना, इस को तफरीहुल खातिर वगैरा कुतुब, मनाक़िब में लिखा है।

अगर मुझे किताब दस्तयाब हो जाती तो इबारत भी नक़्ल कर दी जाती।

हाँ मेरे मुर्शिदे बर हक़, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मुफ्तिये शरीअत, शैखुल इस्लाम वल मुस्लिमीन, सनदुल मुहक़्क़िक़ीन व मुफ्तियीन, आला हज़रत, मौलाना मौलवी अल हाफ़िज़ शाह इमाम अहमद रज़ा रहीमहुल्लाहु त'आला फतावा अफ्रीका में एक सवाल के जवाब में फरमाते हैं :

तफरीहुल खातिर वगैरा में है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ शबे मेराज हुज़ूरे गौसे पाक रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के दोशे मुबारक पर पाये अनवर रख कर बुराक़ पर तशरीफ़ फ़रमा हुये और बाज़ के कलाम में है कि अर्श पर हुज़ूर ﷺ के तशरीफ़ ले जाते वक़्त ऐसा हुआ ना ये कि हुज़ूर गौसियत पाये अक़दस काँधे पर ले कर शबे मेराज खुद अर्श पर गये।

और मज्मूआ -ए- फतावा इरफाने शरीअत हिस्सा सिवुम में इस सवाल का जवाब पाँच सफहात में निहायत शरह व बस्त के साथ लिखा (जिसे हम नक़्ल कर चुके हैं) और ये साबित किया कि इस रिवायत के मान लेने में कोई शरई व अक़्ली इस्तिहाला लाज़िम नहीं आता और इस पर अहादीस से इस्तिदाल किया और इस मब्सूत फतवे को इन अल्फाज़ पर खत्म फ़रमाया :

बिलजुमला रूहे मुक़द्दस का शबे मेराज को हाज़िर होना और हुज़ूरे अक़दस ﷺ का हज़रते गौसियत की गर्दन मुबारक पर क़दम -ए- अकरम रख कर बुराक़ या अर्श पर जलवा फरमाना और सरकार -ए- अबद क़रार से फर्ज़ंदे अर्जूमंद को इस खिदमत के सिला में ये इनाम -ए- अज़ीम अता होना (कि तुम्हारा क़दम वलियों की गर्दनों पर होगा) इन में कोई अम्र ना अक़्लन और शरअन मह्जूर और कलिमाते मशाइख में मस्तूरो मासूर, कुतुबे हदीस में ज़िक्र मादूम ना कि अदम मज़्कूर, ना रिवायाते मशाइख इस तरह सनदे ज़ाहिरी में मह्सूर और क़ुदरते क़ादिर वसी व मौफूर और क़द्रे क़ादरी की बुलंदी मशहूर फिर रद्दो इन्कार क्या मुक़्तदाये अदबो शऊर (इरफान -ए- शरीअत)

(فتاوی اجملیہ، ج1، ص112)

मज़कूरा तमाम फतावा व अक़्वाल की रौशनी में यही कहा जा सकता है कि इस वाक़िये का इन्कार करना, इसे मौज़ू व मनगढत क़रार देना या इस के बयान करने वाले को तनक़ीद का निशाना बनाना हरगिज़ दुरुस्त नहीं है।
अगरचे ये वाक़िया किसी हदीस की किताब में मज़कूर नहीं है लेकिन इस की तायीद अहादीस से होती है और इस के सुबूत के लिये जितनी सनद होनी चाहिये उतनी मौजूद है क्योंकि बाबे अहकाम से इस का कोई ताल्लुक़ नहीं।

जिन मुहक़्क़िक़ उलमा के फतावा से ये रिसाला सजाया गया है, उन्होंने कई मौज़ू रिवायात और मनगढत वाक़ियात की निशान देही अपनी कुतुब और फतावा में फरमायी है और सख्ती से रद्द फरमाया है लिहाज़ा अगर इस रिवायत में ऐसा कुछ होता तो वो ज़रूर इस का भी रद्द फरमाते लेकिन उन्होने ऐसा नहीं किया और इस की तावील की जो अक़्लन व शरअन क़ाबिले क़ुबूल है।
जब मुहक़्क़िक़ उलमा ने इसे बाक़ी रखा है तो इस के इन्कार की वजह नहीं है।

आखिर में मुक़र्रिरीन से ये गुज़ारिश ज़रूर करते हैं कि इसे बयान करने में अलफाज़ का ख्याल रखें और मुकम्मल वज़ाहत के साथ बयान करें ताकि आवामुन्नास गलत फहमी का शिकार ना हो।
देखा गया है कि मुक़र्रिरीन की गलती का फाइदा बदमज़हबों को खूब पहुँचता है लिहाज़ा एहतियात लाज़िम है।

अब्दे मुस्तफ़ा

OUR OTHER PAMPHLETS

















